University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

कालिकापुराण में साहित्यिक चमत्कार

डा. पूनम कुमारी

शिक्षिका (संस्कृत) एम. आर. एस. उ ०मा०विद्यालय,मनियारी, ¼fcgkj½ Òkjr

सारांश

पौराणिक साहित्य में लौकिक साहित्य कीछवि को प्रतिबिंबित करने वाला उपपुराण कालिकापुराण है। इसमें शैली कि बोधगम्यता सरल, सुबोध और उदात्त है। इस पर लौकिक साहित्य कुमारसम्भव का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है।इसमें प्रायः सीधी - सादी आडम्बर विहीन शैली का प्रयोग किया गया है।जनसामान्य की अभिरुचि के अनुरूप रहस्यों का उद्भेदन मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।साहित्य में शैली के साथ ही गुण,रस,अलंकार इत्यादि का भी विशिष्ट स्थान होता है। ओजमयी शैली में वीर रस का उदाहरण अनेक स्थल पर द्रष्टव्य है।श्रृंगार रस का भी मधुर परिपाक कई जगह देखने को मिलता है। शिव - पार्वती के वर्णन में श्रृंगार रस का मधुर संचार हुआ है। काली के वर्णन में अद्भुत रस का भी कई जगह पुट किया गया है। शांत रस का भी संयोग इस पुराण में अपूर्व है।अलंकार काव्य - साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।कालिकापुराण में उपमा, रुपक,अतिशयोक्ति इत्यादि अलंकारों का चमत्कार प्रायः देखने को मिलता है।इस संदर्भ में कालिकापुराण का यह चमत्कारिक अंश द्रष्टव्य है -

पुराण साहित्य मानव - जीवन और उसके चिंतन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र पर दृष्टिपात करता है। शास्त्रों में प्रतिपादित पुरुषार्थ चतुष्ट्य की विवेचना करना इसका प्रमुख प्रतिपाद्य है,साथ ही मानव - मस्तिष्क में उठने वाली सभी शाश्वत जिज्ञासाओं का समाधान भी इनका लक्ष्य है। साहित्य की इस अमूल्य निधि पुराण में संसार का ऐसा कोई ज्ञान - विज्ञान नहीं जिसका आकलन इसमें दृष्टिगोचर नहीं हुआ हो। भारत को पूर्ण रूप से समझने के लिए और उसकी अपनी विशेषताओं के साथ विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर खरा करने के लिए पुराणों का अनुशीलन अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

लौकिक संस्कृत के विविध साहित्यों में पुराण का स्थान सर्वोपरि है।निरुक्त में पुराण शब्द की व्युत्पत्ति - पुरापि नवमस्ति अर्थात् यह शास्त्र प्राचीनकालिक होने पर भी नया नया होता है। यह कालांतर में उत्पन्न परिवर्तनों को अपने में आत्मसात् कर लेता है।

इसी पुराण साहित्य परम्परा में नवीनता को धारण किए हुए कालिकापुराण भी है।कालिकापुराण में काली या देवी के स्वरूप एवं उपासना का सुन्दर और विस्तृत वर्णन के क्रम में अनेक स्थलों पर साहित्यिक चमत्कार दर्शनीय है| पुराण साहित्य की श्रीवृद्धि में इस पुराण की भूयसी ख्याति है| इसकी भाषा में अन्य पुराणों की तरह अपाणिनीय प्रयोगों का बाहुल्य नहीं मिलता।इसमें अत्यंत सरल भाषा शैली में विशेष रूप से आख्यानों के माध्यम से विषय - वस्तु को प्रस्तुत किया गया है।

कालिकापुराण की प्रतिपादन शैली में भक्ति एवं अध्यात्म का पुट सर्वत्र विराजमान है। कहीं यह शैली अत्यंत सरल एवं सहज गति से प्रवाहित होती है, तो कहीं अलौकिकता एवं रहस्यात्मकता का आवरण धारण कर लेती है। इसकी शैली में कहीं तो रोचकता के दर्शन होते हैं और कहीं अरुचिकर नीरसता के वर्णन भी उपलब्ध होते हैं।इस पुराण में कव्यसौंदर्य बोधक शैली भी दृष्टिगोचर होती है। कहीं - कहीं पर यह शैली इतनी उदात्त है कि ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पुराण न होकर यह कोई खंडकाव्य है[1]।कथाओं का विवरण इस पुराण में सरल,सहज तथा समास - विहीन शैली में विस्तार क्रम के साथ विद्यमान है। इस पुराण की शैली अत्यंत सुंदर अलंकारिक, हृदयग्राही तथा अनूठी है।[2]

कालिकापुराण की भाषा शैली में साहित्यिक सुषमा,कोमल पदविन्यास तथा गाढ़ भक्ति भावना का समावेश है। इसमें कहीं भी दार्शनिक दुरुहता, दीर्घपदयुक्त समासिक शैली का प्रयोग नहीं किया गया है।भाषा सरल तथा सुबोध है जिसे कोई भी व्यक्ति सरलता से समझ सकता है।[3]वर्णन इतने सजीव है कि उनके अर्थ स्वच्छ जल में प्रतिबिम्बित वस्तु के भांति प्रतीत होते हैं।

देवी भागवत,देवी पुराण, मार्कण्डेय पुराण की भाषा शैली से कालिकापुराण की भाषा शैली अनेक स्थलों पर मिलती जुलती है।कालिकापुराण के दसवें अध्याय का वर्णन रुद्रसंहिता के पार्वती खंड से बिल्कुल मिलता जुलता है और शब्दतः तथा अर्थतः दोनों दृष्टियों से सामान प्रतीत होता है।

कालिकापुराण में काव्य के सभी रस का यथास्थान उचित निर्वाह हुआ है।श्रृंगार, शांत तथा अद्भुत रसो के सजीव वर्णन अनेकशः विद्यमान है। वीररस का सुन्दर परिपाक भी इस पुराण में उपलब्ध है।कालिकापुराण में संध्या का वर्णन ,पार्वती का वर्णन तथा सती बिहार के दृश्यों में श्रृंगार रस का सुन्दर प्रयोग किया गया है। पार्वती तपस्या एवं शिव पार्वती मिलन के प्रसंग निश्चय ही कालिदास के कुमारसम्भव की शैली का स्मरण दिलाते हैं। देवों के विचित्र सारासार वर्णन में शांत रस का वर्णन होता है।भूगोल और खगोल के वृतांतो में अद्भुत रस का परिचय मिलता है। ऐसे प्रसंगों में पर्वत,नदी तथा द्वीपों के वर्णन हैं। जम्बू, शाक,कुश,शाल्मल,पुष्कर आदि द्वीपों का वर्णन अत्यंत विचित्र ढंग से किया गया है।इस भौगोलिक कल्पना में प्रत्येक द्वीप के चारो ओर किसी न किसी रसात्मक समुद्र का अस्तित्व माना गया है। पृथ्वी के मध्य भग्य में लोकालोक नामक पर्वत माना गया है जिसपर सूर्य उदित होता है। इसी प्रकार मेरु पर्वत की महत्ता भी अद्भुत रस से ओतप्रोत होकर बताई गई है।

इसी प्रकार द्वीपों के निवासियों एवं उनके रीति - रिवाज का भी विवरण आधुनिक मस्तिष्क से परे है। निश्चय ही ये वर्णन अलौकिक कल्पना प्रसूत है और सामान्य जन के मन में लोकोत्तर कौतूहल उत्पन्न करने के लिए ही किए गए है।इनमें अद्भुत रस की सृष्टि होती है तथा ये अतीन्द्रिय जगत को स्मरण करते है।

वीर रस के प्रति सामान्य जन की रुचि सदैव विद्यमान रही है।कालिकापुराण में नरकासुर उपाख्यान[1] इस दृष्टि से देखने योग्य है।इनका वर्णन अति विचित्र शैली में किया गया है। जिन्हे पढ़ने पर युद्ध का सजीव चित्र नेत्रों के सामने प्रगट हो जाता है।युद्ध के वर्णन में गृहीत शैली से युद्ध कला के विविध रूपों का चित्र उपस्थित होता है।

कालिकापुराण में अलंकारों का सुन्दर विन्यास भी यथास्थान दृष्टिगोचर होता है।उपमा, रुपक तथा अतिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग अधिक किया गया है। सती,पार्वती,ब्रह्म,ब्रह्माण्ड आदि के वर्णन में उपमा एवं रुपक के दर्शन होते है।[11]

कालिकापुराण में लौकिक उपमाओं की भांति आध्यात्मिक उपमाओं का भी बाहुल्य है।[12] वर्षा ऋतु के वर्णन में कालिकापुराण में जिन आध्यात्मिक उपमाओं का प्रयोग किया गया है,वे अपने साहित्यिक सौंदर्य तथा गंभीर दार्शनिक चिंतन के निमित्त संस्कृत साहित्य में अनुपम हैं। इसमें बलाकाओं की उपमा यमुना के धृष्ट - फेन से दी गई है। भगवान शंकर के रमण के स्थान को स्वर्ग के समान बताया गया है।[13]इसमें लौकिक तथा आध्यात्मिक उपमाओं का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है।[1]

कालिकापुराण में उत्प्रेक्षा,रुपक आदि अलंकारों का भी यथास्थान प्रयोग किया गया है।[1] अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग पुराणों की शैली की विशेषता मानी गई है।यह पुराण भी इससे अछूता नहीं है।चाहे सृष्टि का वर्णन हो, चाहे संहार का,चाहे युद्ध का वर्णन हो ,चाहे भूगोल - खगोल का, हर जगह अतिशयोक्ति युक्त शैली के दर्शन होते हैं। आख्यानों का वर्णन भी अतिशयोक्ति परक शैली से पूर्ण है और देवी का लोकोतर चरित्र का भी यदि यह कहा जाए कि अतिशयोक्ति का साम्राज्य कालिकापुराण में हर जगह विद्यमान है तो अत्युक्ति न होगी।[1]

राजाओं के कर्तव्य तथा राज्य सभा के उपायों के वर्णन में सरल एवं बोधगम्य शैली का प्रयोग किया गया है।[1]इसी शैली में सेनापति तथा मंत्री से लेकर सामान्य कर्मचारी के कर्तव्य तथा व्यवहार का सूक्ष्मरीत्या वर्णन किया गया है। इन वर्णनों में साम्राज्यवादी दृष्टिकोण परक विचार विद्यमान है।प्रजा को संतुष्ट रखने के राजकर्तव्य तथा स्थायी शांति के उपायों का वर्णन भी इस शैली में किया गया है। देवताओं, असुरों एवं राजाओं के राज्यकाल का वर्णन निश्चय ही रहस्यात्मक तथा अलौकिकता सिद्ध करने वाली शैली का परिचायक है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि कालिकापुराण की भाषा शैली साहित्यिक चमत्कार से परिपूर्ण है।कहीं - कहीं तो यह उदात्त काव्य सौंदर्य से संपन्न है तो कहीं - कहीं दार्शनिक तथा साहित्यिक सौंदर्य दोनों से सर्वथा विभूषित है। अन्ततः कहा जा सकता है की कालिकापुराण की भाषा शैली अपने विषय को सुबोधमय ढंग से प्रस्तुत करने में सर्वथा उपयुक्त है और कहीं - कहीं अपनी विशेषता के कारण पौराणिक साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

जय - जय देवी सुरगणार्चित- पादपङ्कजे।
विश्वस्य भूतिभाविनि शशिमौलि-केलिभाविनि गिरिजे।
नेत्रत्रयनिर्जितविवस्वद्विधुवहिन्कान्तितुलित कमलजे।
मध्यनेत्रगतभ्रूभङ्गभक्तरक्तमति च प्रज्वायक कविकमलजे।।
शब्दार्थ --
श्री = सौंदर्य
भूयसी= अत्यधिक
ख्याति = यश,कीर्ति

अलौकिक = इस लोक से परे

उदात्त= श्रेष्ठ

दुरुह= कठिन

पंकज= कमल

गिरिजा=पार्वती

कमलजा=कमल से उत्पन्न होने वाली

भ्रू=भौं

पाद - टिप्पणी ------

1.कालिकापुराण अध्याय 39-41

2.कालिकापुराण अध्याय 22,62

3.कालिकापुराण अध्याय 30

4.कालिकापुराण अध्याय 1-24,25,26

5.कालिकापुराण अध्याय 39-41,49

6.कालिकापुराण अध्याय 23-41

7.तुलनीय- कालिकापुराण अध्याय 44 के 40-48
तथा कुमारसम्भव सर्ग 5के श्लोक 84-86

8.कालिकापुराण अध्याय 28.....

9.कालिकापुराण अध्याय 25,57,77-79

10.कालिकापुराण अध्याय 15-2

11.कालिकापुराण अध्याय 1,8,25,41

12.कालिकापुराणअध्याय 19.32.33

13.कालिकापुराणअध्याय15-3,4, 15-46,47, 16-9

14.कालिकापुराण अध्याय 5,61,72

15.कालिकापुराण अध्याय 18,96

16.कालिकापुराण अध्याय 6,85,27

17.कालिकापुराण अध्याय 30